क्या आप जानते हैं कि बच्चा होने के तुरंत बाद कॉपर-आईयूसीडी 380 A या 375 लगवायी जा सकती है?

अधिक जानकारी के लिये आज ही
अपने डॉक्टर/काउन्सेलर /ए.एन.एम. से सलाह लें

सिफ्सा SIFPSA

Jhpiego
innovating to save lives
an affiliate of Johns Hopkins University

सिफ्सा SIFPSA

Jhpiego
innovating to save lives
an affiliate of Johns Hopkins University

प्रसव के तुरन्त बाद लगने वाली कॉपर आईयूसीडी क्या है और कब लग सकती है?

यह आम कॉपर-आईयूसीडी है जो प्रसव के तुरन्त बाद तथा 48 घंटे के अन्दर बच्चेदानी में लगाई जाती है। यह:

- आंवल निकलने के 10 मिनट के अन्दर या,
- बच्चा होने के 48 घंटे के अन्दर या,
- ऑपरेशन से बच्चा होने के दौरान भी लगाई जाती है।

यह कब तक प्रभावशाली है?

कॉपर-आईयूसीडी 380 A दस साल तक और कॉपर-आईयूसीडी 375 पाँच साल तक प्रभावशाली है पर अगला गर्भधारण करने के लिए इसे कभी भी निकलवाया जा सकता है।

यह कहाँ लगवाई जा सकती है?

प्रसव के बाद कॉपर-आईयूसीडी 380 A या 375 किसी भी स्वास्थ्य सुविधा में इस विधि में प्रशिक्षित सेवा प्रदाता द्वारा लगायी जा सकती है।

प्रसव के तुरन्त बाद लगायी गयी कॉपर-आईयूसीडी के क्या फायदे हैं?

- यह लगने में आसान है और अस्पताल में नि:शुल्क लगायी जाती है।
- इसका माँ के दूध पर कोई असर नहीं होता।
- जब गर्भ धारण करना चाहें तो इसे कभी भी आसानी से निकलवा सकते हैं, या चाहें तो कॉपर-आईयूसीडी 380 A दस वर्ष तक एवं 375 पाँच वर्ष तक भी रख सकते हैं।

प्रसव के तुरन्त बाद कॉपर-आईयूसीडी लगवाने के बाद क्या हो सकता है?

- प्रसव के 3-6 हफ्तों तक आपको पेडू में मरोड़ महसूस हो सकती है। प्रसव के बाद सभी महिलायें यह मरोड़ महसूस करती हैं क्योंकि बच्चेदानी अपने सही आकार में लौटती है।
- योनि से थोड़ा खून आ सकता है जो प्रसव के बाद सभी महिलाओं में होता है और यह घबराने की बात नहीं है।
- कुछ महिलाओं में कॉपर-आईयूसीडी अपने आप निकल सकती है, अपना पैड चेक करती रहें।
- कुछ महिलाओं में शुरूआत के कुछ महीनों तक माहवारी में हल्का बदलाव आ सकता है जैसे अधिक खून जाना, अधिक दिनों तक खून जाना, खून के धब्बे आना, पेडू में मरोड़ होना। यह समय के साथ अपने आप ठीक हो जाता है।

कॉपर-आईयूसीडी 380ए एवं 375 के बारे में अन्य जानकारियाँ:

- इसके लगने से वज़न नहीं बढ़ता है।
- इसके लगने से बाँझपन नहीं होता है।
- यह बच्चेदानी में ही रहती है, बच्चेदानी से निकल कर दूसरे अंगों में नहीं जा सकती है।
- इसे अपनाने से पति-पत्नी को सहवास के समय कोई असुविधा नहीं होती है।